आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 1 April, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" हम मास्टर ब्रह्मा है .. मास्टर क्रियेटर .. स्वयं को स्वर्ग के रचयिता मानने का और उसपर चलने का पूरा पुरुषार्थ करे "*

सभी ब्राह्मणों की, **योगी आत्माओं** की बहुत ऊँची स्थिति है कि सभी परिस्थितियों में, आपदाओं में मनोरंजन का अनुभव हो। और यह स्थिति है **मास्टर क्रियेटर** की।

आपदायें तो आयेगी ही। भूकंप होगा, गृहयुद्ध होगा। और भी बहुत आपदायें आयेगी। जल में सबकुछ समा जायेगा। **अग्नि** सबकुछ जलाकर नष्ट कर देगी।

लेकिन जिन्हें यह याद रहेगा कि यह सब **प्युरिफिकेशन** का समय है, **परिवर्तन** का समय है। एक चीज़ जायेगी। दुसरी अच्छी चीज़ आने वाली है।

हम मास्टर क्रियेटर है। और इस तरह से विनाश ज्वाला भी इस रूद्र यज्ञ से हो प्रज्वलित होती है। अर्थात विनाश का निमित्त भी हम सबका योगवल ही बनता है।

जो **शंकर** के लिए प्रसिद्ध है कि उसने तीसरा नेत्र खुला, या तान्डव नृत्य किया। तो इस सृष्टि पर महाविनाश होने लगा।

तो हम सभी योगी आत्मायें जब **अतीन्द्रिय सुखों** में निरंतर नृत्य करते रहेंगे। जब हमारा ज्ञान का तीसरा नेत्र पूरी तरह खुल जायेगा, और सदा ही खुला रहेगा।

अभी वह कभी कभी बंद हो जाता है। तब इस सृष्टि पर यह विनाश लीला का खेल चलेगा। भगवान के शब्दों में यह **खेल** है, और मनुष्य के लिए यह महान आपदा का समय होगा।

हम भी इसे खेल की तरह देखेंगे कि **परिवर्तन** की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। तो अभी से बहुत अच्छा अभ्यास करे। परिस्थितियों में अपने को **एकरस** और **साक्षी स्वरुप** में रखने की प्रैक्टिस करे।

परिस्थिति तो आयेगी। **याद रखना है,** वही हो रहा है जो कल्प पहले हुआ था। नाथिंग न्यूं। वही हो रहा है जो होना है। ऐसी ज्ञान स्वरूप स्थिति हम रखेंगे।

अर्थात **ज्ञान का तीसरा नेत्र** हम खोलकर रखेंगे। तो यह सबकुछ हमें मनोरंजन लगेगा।

सभी जानते होंगे कि पहले राजायें हाथियों की लड़ाई कराया करते थे। और वह उनके लिए मनोरंजन होता था। क्योंकि वह उनसे अपने को अधिक पावरफूल समझते थे। क्योंकि वह अपने को मालिक समझते थे।

हम भी यदि **स्वराज्य अधिकारी** के नशे में रहेंगे, और अपने को मास्टर क्रियेटर समझेंगे। बहुत बड़ा यह **स्वमान** है। इसको गहराई से समझना है कि हमारे पास **क्रियेटिव एनर्जी है।**

हम भी मास्टर ब्रह्मा है। और हम इन परिस्थितियों से बहुत अधिक **पावरफूल** है। मास्टर सर्वशक्तिमान है। **ईश्वरीय शक्ति से भरपूर है।**

ऐसी खुमारी में रहने वाले ही इन आत्माओं को मनोरंजन के रूप में देखेंगे।

तो हम सभी को अब बहुत कुछ देखना है इस सृष्टि पर। हम स्वयं को आने वाली आपदाओं के लिए भी तैयार करे। जिसमें हमारा मेरा पन है वह सबकुछ जायेगा।

इसलिए पहले ही कर दे .... " **यह मेरा नहीं यह तेरा है** " । प्रभु अर्पित कर दे। तो जब जायेगा तब हमें कोई भी कष्ट होगा नहीं। हम बहुत आनन्द की स्थिति में रहेंगे।

सारा दिन अभ्यास करेंगे ... जो कुछ इन आखों से दिखाई दे रहा है कुछ ही समय के बाद वह सबकुछ नहीं रहेगा। यह माया की चमकती हुई दुनिया अब समाप्त होकर स्वर्ग की नई दुनिया इस वसुंधरा पर आ जायेगी।

एक दिन वह आयेगा जब यह धरती बहुत ज्यादा खाली हो जायेगी।

इस तरह का चिन्तन करते हुए **अभ्यास करेंगे** कि मुझे तो रह सबकुछ छोड़कर **वापिस जाना है।** और फिर देवता बनकर नीचे आना है।

" तो देवता बनकर अपने को उतरते हुए देखेंगे .. और फरिश्ता बनकर घर की ओर जाते हुए देखेंगे "

हर घन्टे में एकबार यह सुन्दर प्रैक्टिस अवश्य करेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org